Q→ जैन दर्शन के स्याद्वाद की व्याख्या करें?

Ans→ जैन दार्शनिकों का मत है कि जीवन अल्पज्ञ है, क्योंकि कुछ कर्म पुद्गल पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति में बाधा उत्पन्न करते हैं। साधारण व्यक्ति सांसारिक अवस्था में जो ज्ञान प्राप्त करता है, वह कर्म पुद्गलों के कारण अपूर्ण, सापेक्ष तथा एकांगी होता है। कारण यह है कि साधारण व्यक्ति किसी वस्तु को एक समय में एक ही दृष्टि से देख सकते हैं इसलिए उस वस्तु के कुछ ही धर्मों को जान सकता है परिणामस्वरूप वस्तु के सन्दर्भ में जो कुछ कहा जाता है वह अपूर्ण, सापेक्ष तथा एकांगी होने के कारण प्रमाणिक ज्ञान की कोटि में नहीं आता है।

जैन दार्शनिकों का मत है कि यदि इस सापेक्ष, एकांगी ज्ञान को प्रमाणिक बनाना है, तो ऐसे प्रत्येक सांसारिक ज्ञान के पूर्व हमें स्याद् शब्द का प्रयोग करना अनिवार्य है। उल्लेखनीय है कि यहाँ स्याद् शब्द से तात्पर्य संशय, सम्भावना, अनिश्चितता तथा अज्ञेयता आदि से नहीं है, बल्कि यहाँ स्याद् से तात्पर्य है, 'हो सकता है'।

Teacher's Signature

जैन दार्शनिकों के अनुसार किसी वाक्य से पूर्व स्याद शब्द का प्रयोग यह संकेत करता है कि इस शब्द के साथ प्रयुक्त कथन की सत्यता संदर्भ विशेष पर निर्भर है, इसलिए यह कथन सापेक्षिक रूप से सत्य है। अन्य शब्दों में स्याद से युक्त कथन, काल, स्थान तथा दृष्टिकोण विशेष से आंशिक सत्य है, क्योंकि किसी अन्य दृष्टिकोण से कोई अन्य कथन भी उस वस्तु के बारे में प्रस्तुत किया जा सकता है, जो परस्पर भिन्न होते हुए भी अपने प्रसंग के अनुसार उस वस्तु के सन्दर्भ में आंशिक रूप से सत्य हो सकता है।

जैन दार्शनिकों के अनुसार किसी भी सांसारिक ज्ञान से पूर्व स्याद शब्द का प्रयोग नहीं करना एकांगी मत के समतुल्य है साथ ही अप्रमाणिक है। उदाहरणार्थ — कुछ अन्धे हाथी का आकार जानना चाहते थे। इस क्रम में किसी अन्धे ने हाथी का पैर पकड़ा और कहा कि हाथी स्तम्भ की तरह है, अन्य अंधों ने भी हाथी के विभिन्न अंगों को स्पर्श किया; जैसे - पूँछ, पेट, कान आदि तथा क्रमशः रस्सी, दिवार तथा पंखे आदि के रूप

में वर्णित किया। जैन दार्शनिको के अनुसार हाथी के स्वरूप के सन्दर्भ में प्रत्येक अन्धे का मत एकान्तिक था क्योंकि प्रत्येक ने हाथी के किसी एक ही पक्ष का ही वर्णन किया था। उनमें हाथी के स्वरूप को लेकर परस्पर मतभेद भी पैदा हो गया था, किन्तु जैसे ही अन्धों को यह बताया गया कि प्रत्येक ने हाथी के अलग-अलग अंगों को स्पर्श किया है, तो उनका मतभेद दूर हो गया।

स्याद्वाद सप्तभंगी नय का आधार है। स्यादवाद के अन्तर्गत जैन दार्शनिकों की मान्यता है कि सप्तभंगी नय के अन्तर्गत सात प्रकार के भेदो को स्वीकार किया गया है। जिनका वर्णन निम्नलिखित है —

(i) स्याद अस्ति

(ii) स्याद नास्ति

(iii) स्याद् अस्ति च नास्ति च

(iv) स्याद् अव्यक्तव्यम्

(v) स्याद् अस्ति च अव्यक्तव्यम् च

(vi) स्याद् नास्ति च अव्यक्तव्यम् च

(vii) स्याद् अस्ति च नास्ति च अव्यक्तव्यम् च।